International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 09-05-2020; Accepted: 22-05-2020; Published: 12-06-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 101-103

अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा में उपब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन

अभिमन्यु वशिष्ठ
प्राचार्य सिद्धेश्वर विनायक शि. प्रशि. महाविद्यालय, धरियावद जिला . प्रतापगढ़ (राज.) गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

सारांश
इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा में उपब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले के कक्षा आठवीं के स्तर के 100 अल्प संख्यक छात्राओं का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया। उपकरण के रूप में मानकीकृत उपकरण का चयन कर प्रायोगिक अभिक्रिया द्वारा तथ्यों का संकलन किया तथा परिणामस्वरूप अल्प संख्यक छात्राओं में भाषा में उपब्धियों का सार्थक अंतर पाया गया।

मूल शब्दः अल्प संख्यक, भाषा, उपलब्धि

प्रस्तावना
भाषा मानव सभ्यता के विकास क्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने भावों को प्रकट करता है। भारत एक विविधताओं वाला देश है, यहां लोग भिन्न भिन्न स्थानों पर अलग अलग भाषा के माध्यम से विचारों का आदान प्रदान करते हैं।

भाषाओं की जननी कहीं जाने वाली अर्थात् मूल भाषा संस्कृत रही है। संस्कृत ही भारत की भारतीयता, संस्कृति यानि वेद, पुराण, मन्त्र, श्लोक, जिसे देव भाषा का दर्जा प्राप्त है, वे विघटन के फलस्वरूप पाली, हिन्दी, मलयालम, द्रविड़, मराठी, असमी इत्यादि अनेकों भाषाओं ने जन्म लिया है। भारत की सभी भाषाओं में संस्कृत शब्दों के पुट अवष्य है। वहीं अंग्रेजी अर्न्तराष्ट्रीय भाषा है। हिन्दी, भारत में सर्वाधिक प्रयोग में ली जाने वाली भाषा है।

अतः भारत की अखण्ड़ता, सम्प्रभुता को शोध–अनुसंधान के द्वारा अर्न्तराष्ट्रीय विकास की धुरी में लाने हेतु अपनी मूल संस्कृति धरोहर को पहचानने एवं आम जनता तक सुलभ करने हेतु अंग्रेजी, संस्कृत एवं हिन्दी भाषाओं की उच्चता परमावश्यक है।

उपरोक्त बिन्दूओं एवं भावों को ध्यान में रखते हुये शोधार्थी ने शोध के विषय के रूप में प्रतापगढ़ के समाज की अल्प संख्यक छात्राओं की सीखने की प्रमुखता स्तर के वयस्क अर्थात् आठवीं स्तर की शिक्षा के विकास हेतु प्रमुख स्तम्भ भाषा की उपलब्धियों में तुलनात्मक अध्ययन को विषय के रूप में चुना है। जिसका शीर्षक अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा में उपब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन है।

अध्ययन का उद्देश्य
1. प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी की उपलब्धियों का अध्ययन करना।
2. प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी एवं संस्कृत की उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी एवं अंग्रेजी की उपलब्धियाँ समान है।
4. प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा संस्कृत एवं अंग्रेजी में उपलब्धियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पनाएं
1. प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी की उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी एवं संस्कृत की उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी एवं अंग्रेजी की उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा संस्कृत एवं अंग्रेजी में उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सीमांकन
1. अध्ययन को प्रतापगढ़ शहर (राज.) के राजकीय विद्यालयों तक सीमित किया गया।
2. अध्ययन में आठवीं कक्षा की अल्प संख्यक छात्राओं को ही न्याद''र्श में चुना गया है।

न्यादर्श
अध्ययन की वैज्ञानिकता हेतु प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की आठवीं कक्षा की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी की उपलब्धियों के मानक हेतु अध्ययन 100 (एक सौ) अल्प संख्यक छात्राओं को विकसित, अविकसित एवं विकास''ील क्षेत्रों से स्तरीकृत, पुंज, यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है।

उपकरण
आठवीं स्तर की भाषा हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी की उपलब्धियों के शुद्ध मापन हेतु डॉ. आर. डी. सिंह द्वारा निर्मित मानकीकृत

एवं नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन, आगरा द्वारा प्रकाशित कक्षा आठ के स्तर पर उपलब्धि परीक्षण बैटरी का प्रयोग किया गया है।

विधि
अध्ययन में आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधि
अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधि का उपयोग किया गया हैं

1. मध्यमान,
2. प्रमाणिक विचलन,
3. मानक त्रुटि,
4. क्रान्तिक अनुपात।

प्रशासन एवं मूल्यांकन
न्यादर्श में चुनी गयी अल्प संख्यक छात्राओं की उपलब्धि से हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी के प्रश्नों को हल करने को कहा गया जिसका समय 1 घण्टे निर्धारित था, के बाद परीक्षण पत्र को लेकर सभी परीक्षण पत्रों को मेनुअल में दिये गये कुंजी द्वारा सही को 1 (एक) अंक, गलत को शुन्य (0) अंक देकर प्रत्येक छात्रा के उपलब्धियों का योग करते हुए सारणीयन किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या
अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु भाषा हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी की उपलब्धियों की सांख्यिकीय गणना के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक अनुपात की गणना एवं सार्थकता स्तर ज्ञात किया गया है। जिसे तालिका सं. 1 से 4 में दिया गया है।

तालिका संख्या 1: प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं स्तर की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी में प्राप्त की उपलब्धियों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का मान

सांख्यिकी मान	हिन्दी	संस्कृत	अंग्रेजी
मध्यमान	16.58	14.44	18.54
प्रमाणिक विचलन	4.40	4.20	4.08
छात्राओं की संख्या	100	100	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि भाषा, संस्कृत में उपलब्धियों का मध्यमान तुलनात्मक रूप से सबसे कम है जबकि अंग्रेजी में सबसे अधिक है। इसी तरह प्रमाणिक विचलन अंग्रेजी में सबसे कम है अर्थात् वितरण तुलनात्मक रूप से अंग्रेजी में समानता की ओर है। अतः शून्य परिकल्पना – प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी की उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकार की जाती है।

राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी, एव संस्कृत के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता की गणना को तालिका सं. 2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका सं. 2: राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी, एवं संस्कृत के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता अनुपात

प्रतिद"र्श	प्रतिद"र्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अंतर	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
हिन्दी	100	16.58	4.40	2.14	.608	3.51	.01
संस्कृत	100	14.44	4.20				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि हिन्दी का मध्यमान संस्कृत के मध्यमान से 2.14 अंक पीछे है। जिसका क्रान्तिक अनुपात गणना द्वारा 3.51 प्राप्त है जो .01 स्तर पर सार्थकता हेतु 2.58 से अधिक है, अर्थात अन्तर सार्थक है। अर्थात हिन्दी की उपलब्धि सार्थक रूप से संस्कृत की उपलब्धि से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना – प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी एवं संस्कृत की उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकार की जाती है।

राजकीय विद्यालयों में पांचवी स्तर की अल्प संख्यक छात्राओं की हिन्दी एवं अंग्रेजी की उपलब्धियों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की गणना तालिका संख्या–3 में दिया गया है।

तालिका संख्या 3: हिन्दी एवं अंग्रेजी के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता स्तर

प्रतिदर्श	प्रतिदर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अंतर	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
हिन्दी	100	16.58	4.40	1.96	.6	3.2	.01
अंग्रेजी	100	18.54	4.08				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की आठवीं स्तर की अल्प संख्यक की छात्राओं की उपलब्धि अंग्रेजी में हिन्दी की अपेक्षा अधिक है। इनके स्तर की सार्थकता .01 स्तर पर सार्थक है। अर्थात् अंग्रेजी की उपलब्धि का मध्यमान हिन्दी के मध्यमान के अंतर से 99ः सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना – प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा हिन्दी एवं अंग्रेजी की उपलब्धियाँ समान है, अस्वीकार की जाती है।

राजकीय विद्यालयों में पांचवी स्तर की अल्प संख्यक छात्राओं की अंग्रेजी एवं संस्कृत की उपलब्धियों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के अनुपात को तालिका संख्या–4 में प्रद"र्शित किया गया है।

तालिका संख्या 4: संस्कृत एवं अंग्रेजी के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता स्तर

प्रतिदर्श	प्रतिदर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अंतर	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अंग्रेजी	100	18.54	4.08	4.10	.58	7.06	.01
संस्कृत	100	14.44	4.20				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अंग्रेजी की तुलना में संस्कृत की उपलब्धि का मध्यमान बहुत कम है जिसके अन्तर की सार्थकता .01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना –
प्रतापगढ़ के राजकीय विद्यालयों की कक्षा आठवीं की अल्प संख्यक छात्राओं की भाषा संस्कृत एवं अंग्रेजी में उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकार की जाती है।

शैक्षिक उपयोगिता

उपरोक्त गणनाओं एवं व्याख्या से स्पष्ट है कि हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी की उपलब्धियों के मध्यमानों में अन्तर हर स्तर पर .01 स्तर पर सार्थक है। जो सिद्ध करता है कि राजकीय विद्यालयों में अग्रेजी पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। जबकि संस्कृत पर तुलनात्मक रूप से कम ध्यान दिया जा रहा है। हिन्दी जो राजभाषा है, उस पर भी अंग्रेजी की अपेक्षा कम ध्यान दिया जा रहा है।
अतः आवश्यकता है कि सभी भाषाओं पर बराबर ध्यान दिया जाये जिससे अधिगमकर्ता का सभी दृष्टिकोण से विकास किया जा सके।

संदर्भ सूची

1. श्रीवास्तव, डी.एस. (2007). भारतीय शिक्षा का परिदृश्य. आगरा : साहित्य प्रकाशन।
2. श्रीवास्तव, कान्तिमोहन (2007). प्रगतिशील भारत और शिक्षा. आगरा : साहित्य प्रकाशन।
3. शर्मा, सरोज (2008). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा. जयपुर : श्याम प्रकाशन।